भारत में ब्रिटिश आर्थिक नीति के निर्धारक तत्व

डॉ. केशरी नन्दन मिश्रा
एसोसिएट प्रोफेसर (इतिहास), हेमवती नन्दन बहुगुणा राजकीय पी.जी. कालेज, नैनी, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

औद्योगिक क्रान्ति की शुरूआत सर्वप्रथम इंग्लैण्ड में हुई। औद्योगिक क्रान्ति ने इंग्लैण्ड को विश्व का प्रधान उत्पादक तथा निर्यातक देश बना दिया। इसने ब्रिटिश उद्योगों में उत्पादन को उच्चतम शिखर पर पहुंचा दिया, जिसके परिणामस्वरूप ब्रिटेन की आर्थिक प्रणाली में क्रान्तिकारी परिवर्तन आया। यह परिवर्तन ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था का वाणिज्यिक पूंजीवाद से मुक्त व्यापार पूंजीवाद में परिवर्तन था। अर्थव्यवस्था के इन परिवर्तनों ने उपनिवेशवाद को बढ़ावा दिया तथा ब्रिटेन भारत को अपना उपनिवेश बनाने की ओर अग्रसर हुआ।

बाजार की खोज
औद्योगिक क्रान्ति के परिणामस्वरूप ब्रिटेन की उत्पादन प्रणाली में अप्रत्याशित वृद्धि हुई। अब उत्पादित वस्तुओं की खपत के लिए नये बाजार की आवश्यकता महसूस की जाने लगी। ब्रिटेन ने नये बाजार की तलाश में भारत की ओर रूख किया। इस प्रक्रिया ने ब्रिटिश आर्थिक नीति के लिये निर्धारक तत्व का काम किया।

कच्चे माल की अनिवार्यता
औद्योगिक क्रान्ति के कारण ब्रिटेन में अनेक उद्योगों की स्थापना हुई। इन उद्योगों को संचालित करने के लिए कच्चे माल की अनिवार्यता थी। इन कच्चे माल की पूर्ति हेतु नये–नये उपनिवेशों की खोज प्रारम्भ हुई। इस प्रयास में ब्रिटेन ने भारत को अपना उपनिवेश बनाया तथा यहां अपनी आर्थिक नीतियों का संचालन किया।

अर्थव्यवस्था से जुड़ी कुछ प्रथाएं
ददनी प्रथा इस प्रथा के अन्तर्गत ब्रिटिश व्यापारी भारतीय उत्पादकों, कारीगरों एवं शिल्पियों को 'अग्रिम संविदा (पेशगी)' के रूप में दे देते थे। इस प्रथा ने उत्पादन के स्वरूप में परिवर्तन आरम्भ किया। शिल्पी अब उत्पादक न होकर आर्थिक प्रक्रियाओं का सहभागी बन गया। उसके उत्पादों की निर्भरता सीमित खरीददारों में सिमट गई।
कमियौटी प्रथा बिहार एवं उड़ीसा में प्रचलित इस प्रथा के अन्तर्गत कृषि–दास के रूप में खेती करने वाले कमियां जाति के लोग अपने मालिकों से प्राप्त ऋण पर दी जाने वाली ब्याज की राशि के बदले जीवन भर उनकी सेवा करते थे। यह महाजनी बर्बरता के नये युग का आरम्भ था।
तिनकठिया प्रथा बिहार के चम्पारण में प्रचलित इस प्रथा के अन्तर्गत कृषकों को अपनी जमीन 3/20 भाग पर अनिवार्य रूप से नील की खेती करनी पड़ती थी। महात्मा गांधी के प्रयास से वर्ष 1917 में किसानों को इस शोषणपरक प्रथा से छुटकारा मिला।
दुबला हाली प्रथा भारत के पश्चिमी क्षेत्र, मुख्यतः सूरत में प्रचलित इस प्रथा के अन्तर्गत 'दुबला हाली भू–दास' अपने मालिकों को ही अपनी सम्पत्ति का और स्वयं का संरक्षक मानते थे।

आर्थिक नीति के प्रभाव
ब्रिटिश आर्थिक नीतियों का भारत पर निम्नलिखित प्रभाव पड़ा–

कृषि का वाणिज्यीकरण
कृषि के वाणिज्यीकरण का तात्पर्य परम्परागत फसलों के बदले नकदी फसलों के उत्पादन को प्रोत्साहन देना था। आरम्भ में भारतीय सामान खरीदने के लिए कम्पनी को बुलियन का आयात करना पड़ता था। बुलियन को अधिक समय तक आयाम न किया जाये, इसके लिए कम्पनी ने भारतीय जनता से करों की वसूली की तथा इस योजना को क्रियान्वित करते हुए कृषि का वाणिज्यीकरण किया। कृषि के अफीम तथा चाय की उपज पर विशेष रूप से ध्यान केन्द्रित किया गया। कृषि के वाणिज्यीकरण का असर विभिन्न अकालों के रूप में देखने को मिला।

विऔद्योगिकीकरण
विऔद्योगिकीकरण का अर्थ है किसी भी राष्ट्र की औद्योगिकी क्षमता में गिरावट अथवा विनाश। भारत के आर्थिक इतिहास में इस शब्द का अर्थ लगाया जाता है कि 19वीं सदी में ब्रिटिश औद्योगिक उत्पाद के साथ प्रतिस्पर्द्धा के कारण भारत में हस्तशिल्प उद्योगों का पतन। हस्तशिल्प उद्योगों के ह्रास ने ग्रामीण मजदूरों की संख्या में वृद्धि कर दी। हस्तशिल्प उद्योग से जुड़े हुए कारीगर ग्रामीण क्षेत्रों में पलायन कर गये क्योंकि आधुनिक उद्योगों का विकास नहीं हुआ था जहां इन्हें रोजगार प्राप्त होता।

ग्रामीण ऋणग्रस्तता
ग्रामीण ऋणग्रस्तता ब्रिटिश आर्थिक नीति का प्रत्यक्ष परिणाम था। ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने भारतीय कृषि का मौद्रीकरण कर दिया था। दूसरी ओर, भू–राजस्व की राशि इतनी अधिक थी कि जिसे चुकता करने में किसान असफल सिद्ध हो रहे थे, साथ कृषि के वाणिज्यीकरण का परिणाम भी घातक ही सिद्ध हुआ था। परम्परागत उद्योगों का ह्रास हो रहा था, आधुनिक उद्योगों का विकास नहीं किया जा रहा था इन सबका समन्वित परिणाम हुआ ग्रामीण गरीबी कर विस्तार हुआ था जिसने ग्रामीण ऋणग्रस्तता को जन्म दिया। बढ़ी हुई भू–राजस्व की राशि चुकाने में किसान असफल हो रहे थे, अतः वे उस अतिरिक्त राशि को पूरा करने के लिए महाजनों से कर्ज लेने के लिए विवश थे। एक बार महाजनों के चंगुल में पड़ जाने के बाद उन्हें निकलना मुश्किल हो जाता था। ग्रामीण ऋणग्रस्तता ने महाजन एवं कृषकों के सम्बन्धों को तनावपूर्ण बना दिया।
ब्रिटिश आर्थिक नीतियों ने भारत की परम्परागत उत्पादन प्रणाली को गहरे स्तर तक प्रभावित किया। कृषि के वाणिज्यीकरण, हस्तशिल्प उद्योग के विनाश तथा विऔद्योगिकीकरण के कारण उत्पादकता का ह्रास होने लगा। इसका भारतीय अर्थव्यवस्था पर बहुत घातक प्रभाव पड़ा। 19वीं सदी के मध्य में भारत मे एक नव मध्य वर्ग का उदय हुआ। यूरोपियों के आगमन ने भारत में आधुनिक शिक्षा व्यवस्था को जन्म दिया। इस आधुनिक शिक्षा से भारतीय समाज में नई चेतना का संचार हुआ तथा मध्य वर्ग का उदय हुआ। इस नव मध्य वर्ग में वकील, डॉक्टर, अध्यापक, राजकीय कर्मचारी, लेखक आदि महत्वपूर्ण स्थान रखते थे।

सन्दर्भ ग्रन्थ

[1] Deshingkar, P. and Farrington, J. (2009): 'Circular Migration and Multi locational Livelihood Strategies in Rural India', Oxford University Press, New Delhi.

[2] Bhagat, R.B (2010): 'Internal migration in India: are the underprivileged class migrating more?' Asia-Pacific Population Journal, Vol 25, No1, pp 27-45.

[3] Asian Development Outlook 2008: Workers in Asia
[4] Eric Deville, Op-Ed: Cameron's visit to India — Pounds, rupees and democracy, Digital Journal, 20 February 2013
[5] Poorva Joshi (3 February 2017). "An exhibition will showcase 5,000 years of Indian history in 9 stories". Hindustan Times.
[6] Lowe, Lisa (2015), The Intimacies of Four Continents, Duke University Press, p. 71
[7] Fair, C. Christine (2014), Fighting to the End: The Pakistan Army's Way of War, Oxford University Press, p. 61,
[8] Vinay Bahl, Making of the Indian Working Class: A Case of the Tata Iron & Steel Company, 1880–1946 (1995) ch 8
[9] Vinay Bahl, Making of the Indian Working Class: A Case of the Tata Iron & Steel Company, 1880–1946 (1995) ch 8
[10] Daniel R. Headrick, The tentacles of progress: technology transfer in the age of imperialism, 1850–1940, (1988) pp. 78–79
[11] Neil Charlesworth, British Rule and the Indian Economy, 1800–1914 (1981) pp. 23–37
[12] Laura Bear, Lines of the nation: Indian Railway workers, bureaucracy, and the intimate historical self (2007) – pp. 25–28
[13] Baten, Jörg (2016). A History of the Global Economy. From 1500 to the Present. Cambridge University Press. p. 247
[14] "Britain in India, Ideology and Economics to 1900". Fsmitha. F. Smith. Retrieved 2 August 2014.
[15] P.J. Marshall, "The British in Asia: Trade to Dominion, 1700–1765", in The Oxford History of the British Empire: vol. 2, The Eighteenth Century ed. by P. J. Marshall, (1998), pp. 487–507